IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 7, March 2024

मुगल सिक्ख सम्बन्ध (1526-1716)

डॉ. अनिल कुमार साकेत
सहायक प्राध्यापक
इतिहास विभाग
शासकीय कला वाणिज्य महाविद्यालय रामपुर नैकिन जिला सीधी (म.प्र)

शोध सारांश

वर्तमान शोध का उद्देश्य मुगल सिक्ख सम्बन्धों की प्रकृति का अध्ययन करना है। ऐसे विभिन्न मुद्दों का विश्लेषण करना जिन्होंने मुगल सिक्ख सम्बन्धों को प्रभावित किया और जिनके कारण सिक्ख सम्प्रदाय के स्वरूप में परिवर्तन देखने को मिला। यद्यपि अधिकतर इतिहासकार मुगल सिक्ख सम्बन्धो ं को धार्मिक कारणों से प्रभावित मानते है किन्तु केवल एक पहलू की बजाए, मुगल सिक्ख सम्बन्धों का विश्लेषण अन्य पहलूओं विशेष रूप से राजनीतिक आधार पर करने की आवश्यकता है। निःसदेह मुगल सिक्ख सम्बन्धों को तनावपूर्ण बनाने में सिख गुरु घर के विरोधियों, स्थानीय मुगल अधिकारियों तथा पहाड़ी राजाओं की ईर्ष्या ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। किन्तु सिक्ख गुरुओ ं का बढ़ता प्रभाव भी मुगल शासको को अपनी राजनीतिक सत्ता के लिए एक बड़ी चुनौती प्रतीत होने लगा था। अतः यह देखना भी उपयोगी होगा कि क्या सिक्ख सम्प्रदाय धार्मिक से एक राजनीतिक संगठन का रूप धारण कर गया था। मुगल सिक्ख सम्बन्ध– जब 1526 में जहीरूद्दीन मुहम्मद बाबर ने भारत में मुगल वंश की स्थापना की थी तब सिक्ख सम्प्रदाय का अपना एक अलग अस्तित्व नहीं था। गुरू नानक देव की शिक्षाओ ं का जैसे–जैसे प्रचार–प्रसार होता चला गया सिक्खो की संख्या में भी वृद्धि होती गई और वह अपना अलग अस्तित्व व पहचान बनाने में सफल रहा। सिक्ख धर्म का विकास मुगल शासको की नीतियों से भी प्रभावित रहा था और इनके सम्बन्धों के स्वरूप में परिवर्तन धार्मिक व राजनैतिक कारणों का परिणाम था।

गुरु नानक देव का सम्पर्क मुगल बादशाह बाबर से तब हुआ जब उसने सैयदपुर पर हमला किया और गुरु नानक को अन्य कैदियों के साथ बंदी बनाकर जेल में डाल दिया। किन्तु शीघ्र ही उन्हें रिहा कर दिया गया। यद्यपि तत्कालीन फारसी रचनाओं में इस भेंट का कहीं पर वर्णन नहीं मिलता किन्तु सिक्ख परम्पराओं के अनुसार गुरु नानक देव ने बाबर के अत्याचारों का ऑ ंखो देखा वर्णन 'बाबरवाणी' में किया है जोकि इस बात की पुष्टि करता है कि गुरु नानक ने बाबर के हमले को देखा और उसके अत्याचारों की कड़ी निंदा की। गुरु नानक के पश्चात गुरु अंगद देव गुरु गद्दी पर बैठे। सिक्ख परम्पराओं के अनुसार बाबर के पुत्र हुमायु ने गुरु अंगद देव से भेंट की थी। यद्यपि इन्दूभूषण बैनर्जी इस बात को स्वीकार नहीं करते है कि हुमायुं और गुरु अंगद देव का कोई सम्पर्क हुआ था।

गुरु अंगद देव के पश्चात् गुरु अमरदास को गुरु गद्दी मिली। इस समय मुगल बादशाह अकबर राज सिंहासन पर बैठा हुआ था। उसने सभी धर्मों के प्रति उदार नीति का पालन किया जिस कारण सिक्ख धर्म को विकास करने का अच्छा अवसर मिल गया। कहा जाता है कि सम्राट अकबर जब चितौड़ अभियान से विजित होकर लौटा तो वह गुरु अमरदास से मिलने गोइन्दवाल गया। उसने सभी लोगों के साथ बैठकर लंगर खाया और फिर वह गुरु अमरदास से मिला। उसने गुरु जी को लंगर का खर्चा चलाने के लिए कुछ गाँवों की जमीन देने की भी इच्छा प्रकट की। यद्यपि गुरु जी ने यह भेंट स्वीकार नहीं कि किन्तु कुछ इतिहासकारो के अनुसार अकबर ने गुरु अमरदास की बेटी बीबी भानी को 84 गाँवों की जमीन दान में दे दी थी। गोकुलचन्द नारंग के अनुसार अकबर की यात्रा से सिक्ख धर्म को काफी लाभ हुआ और लोग इसकी ओर आकर्षित होने लगे। एक महत्तवपूर्ण बात यह है कि गुरु अमरदास के समय गुरु गद्दी वंशानुगत हो गई थी अर्थात अब गुरु पद परिवार के किसी

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 7, March 2024

योग्य सदस्य को ही दिया जाने लगा। गुरु पद के पारिवारिक हो जाने का यह प्रभाव पड़ा कि अब यह धार्मिक के साथ–साथ राजनैतिक महत्त्व का रूप भी धारण कर गया।

गुरु अमरदास की मृत्यु तक सिक्ख गुरु मर्यादा, अनुशासन व नियमों से पूर्णतयः परिचित हो चुके थे। गुरु रामदास ने इन नियमों को दृढ़तार्पूवक स्थापित किया और सिक्ख धर्म को मजबूत बनाने का प्रयास किया। अकबर ने भी सिक्ख धर्म के प्रति उदारवादी दृष्टिकोण अपनाए रखा। यही कारण था कि उसने गुरु रामदास को अमृतसर के निर्माण के लिए 500 बीघा जमीन दान में दी। मैलकम, लतीफ, फास्टर तथा कनिघंम के अनुसार अकबर ने गुरु रामदास को अमृतसर के लिए जमीन दान में दी थी। फलस्वरूप अमृतसर का निर्माण कार्य प्रारम्भ हुआ। इतिहासकारों के अनुसार–अमृतसर के रूप में सिक्खो को एक तीर्थ स्थान मिल गया था जिससे उनको मन हिन्दू तीर्थों से विरक्त हो गया। हरि राम गुप्ता के अनुसार–गुरु रामदास ने पवित्र सरोवर (अमृतसर) देकर सिक्ख विश्वास को एकजुट कर दिया। उन्होंने सिक्खो को अनुशासन में रहने और अपनी आय का दसवाँ हिस्सा गुरू को दान रूप में देने के लिए कहा। गुरु रामदास ने प्रत्येक सूबे में इसे एकत्रित करने के लिए मंसद भी नियुक्त किए थे। मैकालिफ का कहना है कि गुरु रामदास की प्रसिद्धि दिन–प्रतिदिन सूर्य की किरणों की भाँति बढ़ती गई और सिक्ख धर्म एक विशालकाय वृक्ष की तरह विकसित होता चला गया। लतीफ लिखता है कि सिक्ख अब गुरु को सांसारिक नेता के साथ–साथ एक प्रभुसत्ता सम्पन्न शासक मानने लगे थे।

गुरु रामदास ने अपने बड़े पुत्र पृथ्वी चन्द को गुरु गद्दी न सौ ंपकर छोटे पुत्र अर्जुन देव को सौंप दी। जिससे यह स्पष्ट हो गया कि यद्यपि गुरु पद पारिवारिक बन गया था किन्तु यह पद केवल उसी व्यक्ति को प्राप्त होगा जो इसके योग्य है। गुरु अर्जुन देव का सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य गुरु ग्रन्थ साहिब का सम्पादन करना था।

पेन के अनुसार – गुरु अर्जुन देव जी न केवल आदिग्रन्थ संकलित तथा सम्पादित करने वाले थे बल्कि वह पहले गुरु हुए जिन्होंने अपने अनुयायियों के धार्मिक और सांसारिक नियंत्रण को ग्रहण किया। पृथ्वीचन्द, जो गुरु अर्जुन देव का बड़ा भाई था और गद्दी न मिलने के कारण गुरु जी से ईर्ष्या करता था ने एक मुगल अधिकारी सुलही के साथ मिलकर अकबर से शिकायत की कि आदिग्रन्थ में हिन्दुओं और मुसलमानों के लिए निदंनीय शब्दों का प्रयोग किया गया है। मुगल बादशाह अकबर ने गुरु अर्जुन देव को अपना पक्ष रखने के लिए मुगल दरबार मे ं उपस्थित होने का आदेश दिया। गुरु अर्जुन देव की ओर से बाबा बुड्ढ़ा जी और भाई गुरदास ने मुगल बादशाह को स्पष्ट कर दिया कि गुरु ग्रन्थ साहिब में कोई भी आपत्तिजनक शब्द नहीं लिखे गए है। इसके पश्चात् सिक्ख धर्म निरन्तर विकास करता चला गया। गुरु अर्जुन देव ने तरनतारन, करतारपुर व लाहौर में प्रसिद्ध बावड़ियों का निर्माण करवाया। माझा दोआब क्षेत्र के बहुत से जाट किसान सिक्ख धर्म के अनुयायी बन गए गुरु जी ने मसन्द प्रथा का भी पुनर्गठन किया। खुशवन्त सिह के अनुसार – मसन्दो को कहा गया कि वे ईमानदारी से सिक्ख संगत से एकत्रित किए गए धन को अमृतसर में गुरु कोष में जमा करवाए। विद्यासागर सूरी के अनुसार – ''ऐसा करके गुरु अर्जुन देव ने धर्म के आधार पर एक प्रकार से सिक्खों के राजनीतिक संघ की भी नींव रखी और सरकारी कर्मचारियों के स्थान पर मसन्दो को यह काम दिया। कनिघम लिखता है – सिक्खो ने एक प्रकार की रियासत स्थापित कर दी थी।

किन्तु ऐसा कहना कि गुरु अर्जुन देव ने सिक्खो को राजनैतिक रूप से संगठित करने के लिए ऐसा किया, उचित प्रतीत नहीं होता क्यो ंकि लंगर की प्रथा और निर्धनों व असहाय लोगों की सहायता के लिए सिक्ख संगत से उनकी आय का दसवाँ हिस्सा देने के लिए कहा गया था। गुरु अमरदास से जब अकबर ने 84 गाँवों की जमीन दान में देने की बात कहीं थी तब गुरु अमरदास ने इसे लेने से यह कहकर इन्कार कर दिया था कि लंगर सिक्खों की संस्था है और उसका संचालन भी सिक्ख संगत के दान से ही होना चाहिए। मसंदो की सरकारी महकमे के अधिकारियों से तुलना करना भी ठीक नहीं है। यद्यपि इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता है कि सिक्ख संगठन में वे सभी बाते शामिल हो गई थी जो किसी राजनैतिक क्रांति

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 7, March 2024

को जन्म देने में सहायक होती है। यदि विश्व इतिहास पर नजर डाले तो स्पष्ट होता है कि बहुत से धार्मिक आन्दोलनो ने राजनैतिक आन्दोलनों को जन्म दिया था। किन्तु सिक्ख धर्म अभी एक राजनैतिक संगठन नहीं बना था।मुगल बादशाह अकबर की मृत्यु के पश्चात जहांगीर बादशाह बना जिससे मुगल–सिक्ख सम्बन्धो का एक नया अध्याय आरम्भ हुआ। सरकार का कहना है कि जहांगीर के सिहासन पर बैठने के पश्चात गैर मुसलमानों पर कठोरता का दौर आरम्भ हो गया। तुज्के जहांगीरी में जहांगीर द्वारा लिखे गए इन शब्दों से स्पष्ट हो जाता है कि वह गुरु अर्जुन देव की बढ़ती प्रसिद्धि को पसन्द नहीं करता था –

गोइन्दवाल में जो ब्यास नदी के तट पर स्थित है, अर्जुन नाम का एक हिन्दू रहता था और जो पीरो फकीरो का वेश धारणा किए हुए था, ने बहुत से मुर्ख हिन्दूओ और मुसलमानो को अपने ढोंग में फँसा लिया था। वे उसे गुरु कहते थे। तीन अथवा चार पीढ़ियों से उसकी दुकान चल रही थी। कई बार मेरे मन में यह विचार आया कि मैं इस बेहूदा काम को बंद कर दू अथवा उसे इस्लाम में ले आना चाहिए।

इसी समय शहजादे खुसरो ने जहांगीर के विरूद्ध विद्रोह कर दिया कुछ इतिहासकारो के अनुसार गुरु अर्जुन देव ने खुसरो की मदद की थी और उसके माथे पर तिलक भी लगाया था। इस बात ने जहांगीर को गुरु जी का विरोधी बना दिया। जहांगीर स्वंय तुज्के जहांगीरी मे ं लिखता है कि खुसरो गुरु जी से मिला था। गुरु जी ने उसके माथे पर केसर का तिलक लगाया जोकि एक शुभ शगुन माना जाता है। मुहसिन फानी भी तिलक लगाने की बात की पुष्टि करता है। किन्तु तिलक लगाने का अभिप्राय क्या था। यह स्पष्ट नहीं है कि क्या तिलक इसलिए लगाया था कि गुरु जी उसे अपनी विद्रोहात्मक कार्यवाहियों में सफल होने के लिए उसकी सहायता करते। जहांगीर के वर्णन से यह बात स्पष्ट नहीं होती कि गुरु अर्जुन देव ने खुसरो की सहायता की थी। तिलक लगाना कोई राजनीतिक अपराध नहीं हो सकता। ऐतिहासिक स्त्रोतो से स्पष्ट होता है कि गुरु अर्जुन देव के बड़ा भाई पृथ्वीचन्द और लाहौर के दीवान चन्दूशाह ने जिसकी बेटी का रिश्ता गुरू अर्जुन ने अपने बेटे हरगोविन्द के लिए ठुकरा दिया था, अपने निजी द्वेष के कारण मुगल सम्राट जहांगीर के सामने गुरू जी के प्रभाव को बढ़ा–चढ़ाकर बताया। आदि ग्रन्थ में हिन्दुओं और मुसलमानों के विरूद्ध आपत्तिजनक शब्द लिखे हुए है ऐसा कहकर जहांगीर को गुरू अर्जुन देव के विरूद्ध भड़का दिया जहांगीर ने आदेश दिया कि इन आपत्तिजनक शब्दों को आदिग्रन्थ से निकाल दिया जाए और 2 लाख रूपये जुर्माना भी मुगल सरकार को अदा किया जाए। गुरु अर्जुन देव ने दोनों ही बातो ं से साफ इन्कार कर दिया। अतः गुरु जी को शहीद कर दिया गया। जदुनाथ सरकार के अनुसार–गुरु अर्जुन देव को दण्ड राजनैतिक कारणों से दिया गया क्योंकि इस प्रकार के दण्ड उन्हीं को दिए जाते थे जो मुगल सरकार को राजस्व नहीं देते थे। किन्तु इन्दुभूषण बैनर्जी सरकार के मत से सहमत नहीं है। ऐसा प्रतीत होता है कि सिक्खो की बढ़ती शक्ति, संगठन ने मुगल सिक्ख सम्बन्धों में तनाव उत्पन्न कर दिया था। 1606 ई0 में गुरु अर्जुन देव की शहीदी के पश्चात सिक्ख धर्म के स्वरूप में भी परिवर्तन आ गया। आर्चर लिखता है कि सिक्खों में बड़ा परिवर्तन आ गया। खेतो और बागो में हलो तथा फलो के स्थान पर तलवारो ने रूप धारण कर इस प्रकार संगठन ने सैनिक रूप धारण कर लिया। सिक्खों को यह अहसास हो गया था कि शस्त्र धारण किए बिना धर्म की रक्षा नहीं हो सकती। मुहम्मद लतीफ लिखता है– गुरु जी की शहीदी सिक्खो के इतिहास में एक निर्णायक घटना है, क्यो ंकि इसने सिक्खों के धार्मिक जुनून को भड़का दिया और मुस्लिम शक्ति के प्रति घृणा के बीज बो दिए।17 1606 ई0 में गुरु हरगोविन्द गुरुगद्दी पर बैठे। उन्होंने नवीन नीति का अनुसरण करते हुए मीरी और पीरी दो तलवारे धारण कर सिक्खो के धार्मिक व राजनैतिक गुरु का पद ग्रहण कर लिया।18 उन्होंनें सिक्खो को सैन्य अभ्यास के लिए प्रेरित किया तथा अनुशासन पर विशेष बल दिया। अस्त्र–शस्त्र व घोड़ो की संख्या में भी वृद्धि होने लगी। फलस्वरूप सिक्ख संत सिपाही का रूप धारण कर गए। गुरू हरगोविन्द ने अमृतसर की किलेबन्दी करनी शुरू कर दी थी और अकाल तख्त का भी निर्माण कर दिया जहाँ सभी सैनिक व राजनीतिक विषयो पर विचार–विमर्श किया जाने लगा। सिक्खो के बढ़ते प्रभाव ने जहांगीर को असंतुष्ट कर दिया। उसने गुरु हरगोविन्द को ग्वालियर

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 7, March 2024

के किले में कैद कर दिया। गोकुलचन्द नारंग के अनुसार मुस्लिम सन्त मियां मीर के समझाने पर जहांगीर ने गुरू जी को रिहा कर दिया। इसके पश्चात मुगल सिक्ख संबंध सामान्य बने रहे।19 1627 ई0 में जब शाहजहाँ गद्दी पर बैठा तो मुगल सिक्ख सम्बन्धों में फिर अस्थिरता उत्पन्न हो गई। सिक्ख धर्म का व्यापक प्रचार और गुरु हरगोविन्द की सैन्य गतिविधियो ं ने शाहजहाँ को संशकित कर दिया। यहाँ तक कि शाहजहाँ ने आदेश जारी कर दिया था कि अगर कोई भी मुसलमान अपना धर्म बदलता है तो उसे कठोर दण्ड दिया जाएगा।20 फलस्वरूप मुगल सिक्ख सम्बन्धों में संवेदनशीलता आ गई। शाहीबाज पकड़ने के मामूली से विवाद ने युद्ध का रूप धारण कर लिया। गुरू हरगोविन्द को मुगलो के विरूद्ध कई लड़ाईयाँ लड़नी पड़ी। यद्यपि किसी को भी निर्णायक विजय प्राप्त नहीं हुई किन्तु सिक्खों की सैन्य शक्ति का अहसास मुगल बादशाह को हो गया था। उसे लगा कि कही यह प्रभाव मुगलो की राजनीतिक सत्ता के लिए खतरा न बन जाए। गुरु हरगोविन्द की मृत्यु के पश्चात गुरूहरराय सिक्खो के सातवें गुरू बने। गुरूहरराय शान्त स्वभाव के व्यक्ति थे अतः उन्हो ंने शांतिपूर्वक सिक्ख धर्म का प्रचार–प्रसार किया। गुरू हरराय के समय शाहजहाँ के पुत्रो में गृह युद्ध आरम्भ हो गया था। औरंगजेब से पराजित होकर उसका बड़ा भाई दारा शिकोह पंजाब की ओर आ गया। उसने गुरु हरराय से सम्पर्क किया। कुछ इतिहासकारो ं के अनुसार गुरू हरराय ने दारा की सहायता की थी जिस कारण औरंगजेब ने उन्हें मुगल दरबार में उपस्थित होने के लिए कहा। गुरू हरराय ने अपने बेटे रामराय को भेजा जिसने बादशाह से डरकर आदिग्रन्थ की कुछ पंक्तियों की गलत व्याख्या कर दी इससे बादशाह तो खुश हो गया लेकिन गुरू हरराय ने रामराय को क्षमा नहीं किया और उसे सिक्ख जाति से बाहर निकाल दिया। गुरु हरराय ने अपने पाँच वर्षीय पुत्र हरकृष्ण को गुरू पद सौंप दिया। इसके पश्चात् रामराय ने औरंगजेब के पास शिकायत की उसका अधिकार छीना गया है। औरंगजेब जो सिक्खो के मामलो में हस्तक्षेप कर उन्हें अपने प्रभाव के अधीन लाने का इच्छुक था गुरू हर कृष्ण को मुगल दरबार में उपस्थित होने के लिए कहा। गुरु हरकृष्ण दिल्ली आकर सवाई राजा जय सिंह के महल में ठहरे और दिल्ली में ही 1664 ई0 में उनका निधन हो गया। इसके बाद गुरू तेग बहादुर सिक्खो के नौवे गुरू बने जिनकी शहीदी ने मुगल सिक्ख सम्बन्धों को तनावपूर्ण बना दिया ऐतिहासिक स्त्रोत इस बात की पृष्टि करते है कि औरंगजेब का शासनकाल धार्मिक रूप से सहनशीलता का काल नहीं था। लतीफ के अनुसार–बादशाह औरंगजेब ने सैंकड़ों ब्राह्मणों को जेल में डाल दिया था, इस उम्मीद में कि अगर वे पहले पैगंबर के धर्म को स्वीकार करते हैं, तो बाकी हिंदू सरलता से उनके उदाहरण का पालन करेंगे।

इस तरह की कार्यवाहियाँ कश्मीर के गवर्नर शेर अफगान के द्वारा भी की जा रही थी। अतः कश्मीरी पण्डितों ने गुरु तेग बहादुर से सहायता याचना की। सिक्ख परम्पराओं के अनुसार गुरु तेग बहादुर ने पण्डितों को कहा कि वे औरंगजेब को जाकर कह दे कि सिक्खों के नौवे गुरू तेग बहादुर गुरू नानक के तख्त पर बैठे है। वह हिन्दू धर्म के रक्षक है। पहले उनको मुसलमान बना दो उसके बाद वह सब भी इस्लाम धर्म स्वीकार कर लेगें। अतः गुरु तेग बहादुर को दिल्ली बुलाया गया और इस्लाम धर्म स्वीकार न करने पर उनका वध कर दिया गया। कुछ इतिहासकारो का मानना है कि गुरू तेग बहादुर के वध के पीछे राजनैतिक कारण उत्तरदायी थे। गुलाम हुसैन सियार उल–मुताखरीन मे ं लिखता है कि सिक्खो का संगठन इतना सदृढ़ हो गया था कि यह आशंका उत्पन्न हो गई थी कि यह संगठन कही तंग न करे। यदि औरंगजेब के शासनकाल की तत्कालीन राजनैतिक गतिविधियों का अध्ययन किया जाए तो स्पष्ट होता है कि उस समय कई कबीले विद्रोह कर रहे थे। यूसफजई और अफरीदियों के विद्रोह ने स्थिति को काफी गम्भीर बना दिया था। यही कारण था कि औरंगजेब को स्वय सेना लेकर इन विद्रोहियो के दमन के लिए आना पड़ा था। उसने हसन अब्दाल पहुँचकर कबाइलियों के विद्रोह का दमन किया। सम्भव है कि गुरू तेग बहादुर की निडरता को भी औरंगजेब ने अपनी राजनैतिक सत्ता के लिए एक चुनौती माना हो। कुछ इतिहासकारों का मानना है कि जब गुरू तेग बहादुर का वध किया गया तब औरंगजेब दिल्ली मे ं नहीं था। गुरू जी का वध काजी के आदेश पर हुआ। जबकि लतीफ लिखता है कि गुरू तेग बहादुर को बादशाह तथा अमीरो और वजीरो के सम्मुख लाया गया। इन्दुभूषण

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 7, March 2024

बैनर्जी जैसे इतिहासकार इस वध का कारण औरंगजेब की धार्मिक असहनशीलता की नीति को मानते है। गुरु गोबिन्द सिंह ने भी विचित्र नाटक में लिखा है कि उनके पिता ने तिलक तथा जंजू की रक्षा के लिए बलिदान दिया था।24 1675 ई0 में गुरु गोबिन्द सिंह गुरु गद्दी पर बैठे। गुरु जी ने सिक्खो के संगठन को मजबूत बनाने के प्रयास किए जिससे पहाड़ी राजा संशकित हो गए। और उन्होंने गुरु गोविन्द के विरूद्ध संयुक्त मोर्चा बनाना आरम्भ कर दिया। कनिघम के अनुसार – वे (गुरु गोविन्द सिंह) पर्वतीय रजवाड़ियों को अपने प्रभाव मे लाकर मुगल सरकार के विरूद्ध एक आभासी रियासत स्थापित करना चाहते थे। जबकि इन्दुभूषण बैनर्जी का कहना है कि पर्वतीय रजवाड़ियों के विशेष राजनीतिक अधिकार, सामाजिक भिन्नता और कबाइली अहंकार ने उन्हें गुरु जी के विरूद्ध एक संयुक्त मोर्चा बनाने की प्रेरणा दी। अतः भंगाणी के स्थान पर युद्ध हुआ जिसमें पहाड़ी राजा पराजित हो गए। इसके पश्चात् गुरु गोबिन्द सिंह ने 1699 ई0 में खालसा पंथ की स्थापना की। राजपाल के अनुसार–उन्होने सिक्खों में एक सैनिक उत्साह भर दिया।27 तेजा सिंह और गंडा सिंह लिखते है कि – वे लोग जोकि हिन्दू समाज में दलित समझे जाते थे, बिल्कुल बदल गए थे। भंगी, नाई और हलवाई जिन्होंने कभी तलवार को हाथ भी नहीं लगाया था और जो पीढ़ियों से उच्च जातियों के गुलाम रहे थे वे गुरु साहिब की अगुवाई में वीर सैनिक बन गये थे। कनिघंम के अनुसार गुरु गोबिन्द ने सिक्खो की निष्क्रिय उर्जा को प्रभावी ढंग से जगाया और उन्हें सामाजिक स्वतंत्रता और राष्ट्रीय प्रभुत्व के लिए एक उच्च लालसा से भर दिया। किन्तु जदुनाथ सरकार का कहना है कि गुरु गोबिन्द सिंह ने सिक्खो की धार्मिक एकता को राजनीतिक पूर्ति का एक सिद्धांत बना लिया। इन्दुभूषण बैनर्जी के अनुसार गुरु जी का आशय न तो राजनीतिक शक्ति बनना था और न ही पदार्थिक उन्नति करना। गुरु गोबिन्द की सैन्य गतिविधियों की रिपोर्ट मुगल बादशाह औरगजेब को पहुँचा दी गई। अतः गुरु गोविन्द सिंह के बढ़ते प्रभाव को समाप्त करने का शाही आदेश पारित किया गया। फलस्वरूप सिक्खो व मुगलो के मध्य कई लड़ाईयाँ लड़ी गई जिसमे ं गुरू जी का पूरा परिवार शहीद हो गया। कहा जाता है कि गुरु गोबिन्द ने मुगल बादशाह औरंगजेब को 'जफरनामा' लिखा जिसे पढ़कर औरंगजेब ने गुरु जी को मिलने बुलाया। किन्तु शीघ्र ही उसकी मृत्यु हो गई। इसके पश्चात उसके पुत्रों में गद्दी के लिए संघर्ष आरम्भ हो गया जिसमें बहादुरशाह विजयी रहा सिक्ख स्त्रोतों के अनुसार गुरु गोविन्द ने इस युद्ध में बहादुरशाह की मदद की थी जिस कारण उसने गुरु गोबिन्द से भेंट कर उनका बहुत सम्मान किया। गुरु गोबिन्द ने बहादुरशाह को अपराधी मुगल अधिकारियों को दण्डित करने के लिए कहा किन्तु बादशाह टाल–मटोल करता रहा। अतः गुरु जी नदेड़ में माधोदास बैरागी से मिले उसे अपना सिक्ख बनाकर बंदासिंह बहादुर का नाम दिया। गुरु जी ने उसे पंजाब मे मुगल अत्याचारों का अंत करने का आदेश दिया। बंदासिंह बहादुर ने पंजाब आकर गुरु जी के सिक्ख संगत के नाम लिखे हुक्मनामे भेजकर उनका सहयोग प्राप्त कर लिया। खफीखान के अनुसार उसके पास काफी सेना एकत्रित हो गई थी। बहादुरशाह दक्षिण में अपने भाई कमबख्श और राजपूतो के विरूद्ध संघर्ष में उलझा हुआ था जिसका लाभ उठाकर बंदासिंह ने दिल्ली डिवीजन के आस–पास के इलाके का जीत लिया और पहला सिक्ख राज्य स्थापित कर दिया। बंदासिंह बहादुर द्वारा स्थापित राज्य चिरस्थाई नहीं रहा और उनकी मृत्यु के साथ इसका भी अंत हो गया।

निष्कर्ष

अतः स्पष्ट है कि सिक्ख धर्म का विकास और इतिहास मुगल शासको की नीतियो ं से संबंधित रहा। अकबर की धार्मिक सहनशीलता की नीति और सिक्ख गुरूओं के उदारवादी व्यवहार के कारण सिख धर्म को विकास करने का अच्छा अवसर प्राप्त हो गया तथा सिक्खो के प्रभाव में वृद्धि होती चली गई। यद्यपि प्रारम्भिक रूप में सिक्ख सम्प्रदाय कोई राजनीतिक संगठन नहीं था किन्तु गुरु अर्जुन देव की शहीदी ने इसके स्वरूप में परिवर्तन ला दिया गुरु हरगोबिन्द के समय गुरु पद धार्मिक के साथ–साथ राजनीतिक महत्त्व ग्रहण कर गया था। सिक्खो ने गुरु को 'सच्चा पातशाह' के नाम से सम्बोधित करना शुरू कर

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 7, March 2024

दिया था सिक्खो का सैन्य अभ्यास करना, घोड़े शस्त्र आदि एकत्रित करना, आदि ने मुगल बादशाह व पहाड़ी राजाओं को सशंकित कर दिया। उन्हें सिक्खो का बढ़ता प्रभाव अपनी राजनीतिक सत्ता के लिए गम्भीर खतरा प्रतीत होने लगा। अतः कहा जा सकता है कि मुगल सिख सम्बन्ध न केवल धार्मिक बल्कि राजनीतिक कारणों से भी प्रभावित रहे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[1]. देव, गुरु नानक 'आसा दी वार' महल्ला पहला, पृष्ठ–3।
[2]. गुरदास वार पहली पाऊडी 46, पृष्ठ 5।
[3]. मैकालिफ, मैक्स आर्थर 'द सिख रिलीजन' वोल्यूम–2, ऑक्सफोर्ड, 1909 पृष्ठ 105।
[4]. सिंह, खुशवन्त 'ए हिस्ट्री ऑफ द सिक्ख' 1469–1839: दिल्ली : ऑक्सफोर्ड, 1981 पृष्ठ 55।
[5]. नारंग, गोकुलचन्द 'ट्रांसफॉरमेशन ऑफ सिखज्म' लाहौर न्यू बुक सोसायटी, 1912, पृष्ठ 57।
[6]. छाबड़ा, जी.एस. 'एडवान्स हिस्ट्री ऑफ द पंजाब' पंजाबःन्यू एकेडमिक, 1960, पृष्ठ–146।
[7]. गुप्ता, हरिराम, 'स्टडीज़ इन लेटर मुगल हिस्ट्री ऑफ द पंजाब' लाहौर पब्लिकेशन, 1944, पृष्ठ 36।
[8]. मैकालिफ, मैक्स आर्थर 'द सिख रिलीजन' वोल्यूम–2,
[9]. ऑक्सफोर्ड, 1909, पृष्ठ 150।
[10]. लतीफ, सैयद मुहम्मद, 'हिस्ट्री ऑफ द पंजाब', नई दिल्ली, 1964, पृष्ठ 253।
[11]. पेन, चार्ल्सहर्बट, 'ए शॉर्ट हिस्ट्री ऑफ द सिख', लंदन, 1915, पृष्ठ 31।
[12]. मैकालिफ, मैक्स आर्थर 'द सिख रिलीजन' वोल्यूम–3, ऑक्सफोर्ड, पृष्ठ 1,2 12.
[13]. सूरी, विद्यासागर, 'पंजाब का इतिहास', चण्डीगढ़, 1976 पृष्ठ 52।
[14]. जहाँगीर, 'तुज्के जहांगीरी'. बेवरिज, हेनरी तथा रोजर्स, अलेक्जेडर द्वारा अनुवादित, लंदन, 1909, पृष्ठ 72–73।
[15]. छाबड़ा, जी.एस. 'एडवान्स हिस्ट्री ऑफ द पंजाब' पंजाबः न्यू एकेडमिक, 1946, पृष्ठ 173।
[16]. सरकार, जदुनाथ, 'हिस्ट्री ऑफ औरंगजेब', कलकत्ताः 1928, पृष्ठ– 308–09।
[17]. आर्चर, 'द सिख' लंदन, 1946, पृष्ठ 171।
[18]. लतीफ, सैयद मुहम्मद, 'हिस्ट्री ऑफ द पंजाब' नई दिल्ली, 1964, पृष्ठ 254।